कालिदास कृत मेघदूत: एक विवेचना

Seema Punia, MA (Sanskrit literature), Mphil (Sanskrit), seemapunia2011@gmail.com

सार

संस्कृत भाषा ही आर्यों की मातृ-भाषा थी। कहतें हैं-उस समय संस्कृत भाषा को ही लोक-व्यहार के प्रयोग में लाया जाता था। इसलिए संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वानों की भी कमी नहीं थी। कुछ विद्वान वीणा पाणि मां सरस्वती के कृपा-पात्र भी थे, उनमें से एक कवि कालिदास का नाम भी आता है। संचार के साधनों में पशु-पक्षी भी आते थे। इसलिए विरही यक्ष का संदेश-वाहक कवि ने मेघ (बादल) को बनाया जिसमें विरह-व्यथा के मार्मिक वर्णन का प्राकृतिक चित्रण भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

तारक नामक असुर का वध भगवान शंकर के अंश द्वारा ही सम्भव था। इसलिए परम विरक्त शिवजी को वैवाहिक बंधन में बंधने हेतु कामदेव को भेजना, शिव-कोप से कामदेव का भस्म होना, पार्वतीजी के अखंड तप से शिव का प्रसन्न होना, पार्वती-विवाह और काम का पुनर्जीवित होना, शिव का दाम्पत्य सुख-भोग और सुकुमार (स्वामी कार्तिकेय) की उत्पत्ति, सेनापतित्व में तारक असुर का वध आदि का वर्णन 'कुमार संभवम्' काव्य में बहुत ही सरस एवं अलंकृत भाषा में किया गया है।

मत्वा देवं धनपतिसखं यत्र साक्षाद्वसन्तं
प्रायश्चापं न वहति भयान्मन्मथ: षट्पदज्यम्।
सभ्रूभङ्गप्रहितनयनैः कामिलक्ष्येष्वमोघै-
स्तस्यारम्भश्चतुरवनिताविभ्रमैरेव सिद्ध:।।

मुख्य शब्द: संस्कृत, मेघ, प्राकृतिक, वैवाहिक इत्यादि।

प्रस्तावना

किसी ग्रन्थ की महत्ता और उपादेयता उसकी लोकप्रियता पर निर्भर करती है। विद्वान और अविद्वान दोनों को ही ग्रन्थ समान रूप से प्रिय होते हैं। वे ही ग्रन्थ प्रशंसनीय होते हैं और उन्हीं की महत्ता तथा उपादेयता भी स्वतः सिद्ध है।

संस्कृत साहित्य और कालिदास का सम्बन्ध अटूट है। संस्कृत साहित्य का सारा सौष्ठव बहुत कुछ इन ग्रन्थों पर निर्भर है। यदि संस्कृत साहित्य से कालिदास को हटा दिया जाये तो उसमें अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के रहते हुए भी संस्कृत साहित्य की लोकप्रियता में कमी आ जाएगी।

कालिदास अथवा उनकी कृतियों के प्रशंसक भारत ही में नहीं अपितु विश्व-भर में पाये जाते हैं। अमेरिकी विद्वान राइडर ने उनकी श्रेष्ठता को स्वीकार करते हुए अन्त में यही कहा था, 'कालिदास महान् साहित्यकार थे।' जर्मन कवि गेटे ने तो उनकी प्रशंसा में बहुत कुछ कह डाला था और कालिदास की अनन्य कृति 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' को पढ़कर उनके मुखे से बरबस निकल पड़ा था 'यदि तुम स्वर्ग और मृत्युलोक को एक ही स्थान पर देखना चाहते हो तो मेरे मुख से सहसा एक ही नाम निकल पड़ता है–

'शाकुन्तलम'।

कालिदास का 'मेघदूत' यद्यपि छोटा-सा काव्य-ग्रन्थ है किन्तु इसके माध्यम से प्रेमी के विरह का जो वर्णन उन्होंने किया है उसका उदाहरण अन्यत्र मिलना असंभव है। आषाढ़ और श्रावण का प्रेम

और रति के प्रसंग में बड़ा महत्त्व माना गया है। न केवल संस्कृत में अपितु कालान्तर में उर्दू कवियों ने भी इस पर अपनी लेखनी चलायी है। किसी उर्दू कवि ने कहा है–

तौबा की थी, मैं न पियूंगा कभी शराब।
बादल का रंग देख नीयत बदल गयी।।

कालिदास ने जब आषाढ़ के प्रथम दिन आकाश पर मेघ उमड़ते देखे तो उनकी कल्पना ने उड़ान भरकर उनसे यक्ष और मेघ के माध्यम से विरह–व्यथा का वर्णन करने के लिए 'मेघदूत' की रचना करवा डाली। उनका विरही यक्ष अपनी प्रियतमा के लिए छटपटाने लगा और फिर उसने सोचा कि शाप के कारण तत्काल अल्कापुरी लौटना तो उसके लिए सम्भव नहीं है। इसलिए क्यों न संदेश भेज दिया जाए। कहीं ऐसा न हो कि बादलों को देखकर उनकी प्रिया उसके विरह में प्राण दे दे। और कालिदास की यह कल्पना उनकी अनन्य कृति बन गयी।

'कुमार संभवम्' में यद्यपि कालिदास का कथानक तारक के अत्याचार से देवताओं को मुक्ति दिलाने का है। किन्तु इसमें भी शिव और पार्वती का जो प्रेमाख्यान है, वही मुख्य है। इस प्रसंग में उन्होंने स्वयं कहा है– 'तथाविधं प्रेम पतिश्च तादृशः' पार्वती का जैसा प्रेम और शंकर जैसा पति, ये दोनों ही अलभ्य हैं। इसी आधार पर उन्होंने 'कुमार संभवम्' की रचना कर डाली।

पहली बार जब शंकर भगवान तपस्या कर रहे थे तो हिमालय के निर्देश पर उनकी कन्या पार्वती उनकी सेवा–सुश्रूषा करने लगी। क्योंकि नारदजी ने उनके मन में शंकर के प्रति प्रेम का बीज अंकुरित कर दिया था। किंतु जब शिवजी कामदेव का दहन कर अपनी तपस्या बीच में ही छोड़कर वहाँ से चले गये तो पार्वती को लगा कि वह रूप किस काम का जो अपने प्रिय को रिझा न सके। तब उन्होंने तपस्या द्वारा अपने प्रिय को रिझाने का संकल्प किया और उसके अनुसार वे कठोर तप में निरत हुई। पार्वती की तपस्या और शिवजी का छद्म रूप में आकर उसको शिव से विरत करना और अन्य में स्वयं को प्रकट कर उसका पाणिग्रहण करना तथा उसके साथ प्रेम–लीला कर कुमार की उत्पत्ति करना, यही इसका मुख्य उपादेय है। कुमार की देवसेना का सेनापतित्व ग्रहण कर तारक राक्षस से देवताओं का त्राण करना, इसका अपर उपादेय माना जाता है। यही 'कुमार संभवम्' की कहानी है।

मेघदूतम्

कुबेर की राजधानी अलकापुरी में एक यक्ष की नियुक्ति यक्षराज कुबेर की प्रातःकालीन पूजा के लिए प्रतिदिन मानसरोवर से स्वर्ण कमल लाने के लिए की गयी थी। यक्ष का अपनी पत्नी के प्रति बड़ा अनुराग था, इस कारण वह दिन–रात अपनी पत्नी के वियोग में विक्षिप्त–सा रहता था। उसका यह परिणाम हुआ कि एक दिन उससे अपने नियत कार्य में भी प्रमाद हो गया और वह समय पर पुष्प नहीं पहुंचा पाया। कुबेर को यह सहन नहीं हो सका और उन्होंने यक्ष को क्रोध में एक वर्ष के लिए देश निकाल दिया और कहा दिया कि जिस पत्नी के विरह में उन्मत्त होकर तुमने उन्माद किया है अब तुम उससे एक वर्ष तक नहीं मिल सकते।

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत:
शापेनास्तग्ड: मितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तु:।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।

कोई यक्ष था। वह अपने काम में असावधान हुआ तो यक्षपति ने उसे शाप दिया कि वर्ष–भर पत्नी का भारी विरह सहो। इससे उसकी महिमा ढल गई। उसने रामगिरि के आश्रमों में बस्ती बनाई जहाँ घने छायादार पेड़ थे और जहाँ सीता जी के स्नानों द्वारा पवित्र हुए जल–कुंड भरे थे।

अपने स्वमी का शाप सुनकर तो यक्ष बड़ा छटपटाया, उसका सारा राग–रंग जाता रहा। अपने शाप की अवधि बिताने के लिए उसने रामगिरि पर्वत पर स्थित आश्रमों की शरण ली। उन आश्रमों के समीप घनी छायावाले हरे–भरे वृक्ष लहलहाते थे और वहां जो तालाब तथा सरोवर थे उनमें कभी सीताजी ने स्नान किया था। इस कारण उनका महत्त्व बढ़ गया था।

रामगिरि से अलकापुरी दूर थी। अपनी पत्नी का एक क्षण का भी वियोग जिसके लिए असह्य था, वह यक्ष अब इन आश्रमों में रहते हुए सूखकर कांटा हो गया था। उसके शरीर पर जितने आभूषण थे वह ढीले होकर इधर–उधर गिरने लगे थे। इस प्रकार वियोग में व्याकुल उस यक्ष ने कुछ मास तो उन आश्रमों में किसी–न–किसी प्रकार बिताए, किन्तु जब गर्मी बीती और आषाढ़ का पहला दिन आया तो यक्ष ने देखा कि सामने पहाड़ी की चोटी बादलों से लिपटी हुई ऐसी लग रही थी कि कोई हाथी अपने माथे की टक्कर से मिट्टी के टीले को ढोने का प्रयत्न कर रहा है।उन बादलों को देखकर यक्ष के मन में प्रेम उमड़ पड़ा। वह बड़ी देर तक खड़ा–खड़ा उन बादलों को एकटक देखता ही रहा। क्योंकि बादलों को देखकर जब जो जन सुखी हैं और जो अपनी पत्नी के समीप हैं, उनका ही मन डोल जाता है, फिर उस विरह–व्याकुल यक्ष की तो बात ही क्या है ! वह बेचारा तो बहुत दूर देश में पड़ा हुआ अपनी पत्नी के वियोग में तड़प रहा था।

यत्र स्त्रीणां प्रियतमभुजालिङ्गनोच्छ्वासिताना–
मङ्गग्लानि सुरतजनितां तन्तुजालावलम्बा:।
त्वत्संरोधापगमविशपैश्चन्द्रपादैनिशीथे
व्यालुम्पन्ति स्फुटजललवस्यन्दिनश्चन्द्रकान्ता:।।

उपसहर

कालिदास रचित मेघदूतम् मेघदूतम् महाकवि कालिदास द्वारा रचित विख्यात दूतकाव्य है। इसमें एक यक्ष की कथा है जिसे कुबेर अलकापुरी से निष्कासित कर देता है। निष्कासित यक्ष रामगिरि पर्वत पर निवास करता है। वर्षा ऋतु में उसे अपनी प्रेमिका की याद सताने लगती है। कामार्त यक्ष सोचता है कि किसी भी तरह से उसका अल्कापुरी लौटना संभव नहीं है, इसलिए वह प्रेमिका तक अपना संदेश दूत के माध्यम से भेजने का निश्चय करता है। अकेलेपन का जीवन गुजार रहे यक्ष को कोई संदेशवाहक भी नहीं मिलता है, इसलिए उसने मेघ के माध्यम से अपना संदेश विरहाकुल प्रेमिका तक भेजने की बात सोची। इस प्रकार आषाढ़ के प्रथम दिन आकाश पर उमड़ते मेघों ने कालिदास की कल्पना के साथ मिलकर एक अनन्य कृति की रचना कर दी। मेघदूत की लोकप्रियता भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से ही रही है। जहाँ एक ओर प्रसिद्ध टीकाकारों ने इस पर टीकाएँ लिखी हैं, वहीं अनेक संस्कृत कवियों ने इससे प्रेरित होकर अथवा इसको आधार बनाकर कई दूतकाव्य लिखे। भावना और कल्पना का जो उदात्त प्रसार मेघदूत में उपलब्ध है, वह भारतीय साहित्य में अन्यत्र विरल है। नागार्जुन ने मेघदूत के हिन्दी अनुवाद की भूमिका में इसे हिन्दी वाङ्मय का अनुपम अंश बताया है। मेघदूतम् काव्य दो खंडों में विभक्त है। पूर्वमेघ में यक्ष बादल को रामगिरि से अलकापुरी तक के रास्ते का विवरण देता है और उत्तरमेघ में यक्ष का यह प्रसिद्ध विरहदग्ध संदेश है जिसमें कालिदास ने प्रेमीहृदय की भावना को उड़ेल दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] काव्य मीमांसा – राजशेखर

[2] ध्वन्यालोक – व्याख्याकार श्री कृष्ण कुमार

[3] ध्वन्यालोक – व्याख्याकार, आचार्य विश्वेश्वर

[4] वक्रा ेक्तिजीवित – कुन्तक

[5] काव्यालंकार सूत्र – वामन

[6] "मेघदूत" (पीएचपी). भारतीय साहित्य संग्रह. अभिगमन तिथि ९ मार्च २००९. ।

[7] "कालिदास कृत मेघदूत और उसकी लोकप्रियता" (एचटीएम). हिन्दी नेस्ट. अभिगमन तिथि ९ मार्च २००९. ।